जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 49 संख्याः 357 प्रभात कोटा, बुधवार 9 अक्टूबर, 2024 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

जाट-गैर जाट का ध्रुवीकरण ले बैठा कांग्रेस को हरियाणा में?

ध्रुवीकरण को ताकत मिली इस बात से कि टिकट वितरण में पूरी तरह से चली सशक्त जाट नेता भूपेन्द्र सिंह हूडा की। उन्हें 90 टिकटों में से 73 सीटों पर उम्मीदवार चुनने का एकाधिकार दिया गया

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 अक्टूबर। सभी उम्मीदों और भविष्यवाणियों को उलटते हुए भाजपा ने निर्णायक रुप से कांग्रेस को हराकर और 90 में से 48 सीटों पर जीत हासिल करके पूर्ण बहुमत के साथ तीसरी बार लगातार तीसरी बार सत्ता में तीसरा कार्यकाल अपने नाम किया है।

सूत्रों का कहना है कि मौजूदा मुख्यमंत्री सैनी इस पद पर बने रहेंगे।

जम्मू और कश्मीर में कांग्रेस नैशनल कॉन्फ्रैंस गठबंधन ने 49 सीटों के साथ बहुमत हासिल किया है तथा इस महत्वपूर्ण सीमावर्ती राज्य में सत्ता हासिल करने की भाजपा की उम्मीद पर पानी फेर दिया है।

भाजपा ने जम्मू में केवल 29 सीटें जीती हैं जबकि कांग्रेस की 6 सीटें मिलाकर नैशनल कॉन्फ्रैंस को 42 सीटें मिली हैं। जम्मू में कांग्रेस बुरी तरह हारी और वहाँ एक भी सीट नहीं जीत पाई।

उमर अब्दुल्ला अब जम्मू और कश्मीर के नए मुख्यमंत्री होंगे।

तो हरियाणा में कांग्रेस के साथ ऐसा क्या हुआ कि वो 90 में से केवल 37 सीटें ही जीत पाई और लगातार तीसरे कार्यकाल में अब विपक्ष में बैठेगी।

- इस तथ्य से, ऐसा माना जा रहा है कि गैर जाट भयभीत हुए, क्योंकि वे जाटों के सामर्थ्य व शक्ति से काफी परिचित थे। अतः भाजपा सरकार की भारी एंटी इनकम्बैंसी के बावजूद, गैर जाट वोट भारी संख्या में भाजपा के पक्ष में गिरा।
- दलित वर्ग ने भी कांग्रेस का साथ छोड़ा तथा राम रहीम के नेतृत्व में भाजपा के पक्ष में मतदान किया, जिन्हें चुनाव से पूर्व जेल से पैरोल पर रिहा किया गया था। राम रहीम के अनुयायी मूलतः दलित हैं।
- भाजपा की जीत का एक अहम् कारण यह भी है कि बड़ी होशियारी से भाजपा ने हर सीट पर माइक्रो मैनेजमैंट किया। उदाहरण के लिये, कांग्रेस के वोट बैंक का विभाजन करने के लिए, सीट की स्थिति देखते हुए कहीं तो बसपा का चौटाला की पार्टी से गठबंधन करवाया और कहीं आज़ाद का उपयोग किया और कहीं और निर्दलीय उम्मीदवार खड़े किये, कांग्रेस को नुकसान पहुँचाने के लिये।

हरियाणा में कांग्रेस की इस बुरी हार के लिए कई कारकों को जिम्मेवार माना जा रहा है।

विश्लेषकों का कहना है कि, ध्रुवीकरण और भाजपा का माइक्रोमैने-जमैंट तथा चुनावी जोड़-तोड़ इसका कारण है।

एक वरिष्ठ नेता ने कहा, "किसी भी राज्य में, जहाँ भाजपा का सी.एम. और डी.एम. है, आप निश्चित रुप से कह सकते हैं कि वो चुनाव जीतेंगे।"

विश्लेषकों का कहना है कि जाट और गैर जाट की भी भूमिका रही है। हरियाणा के जाट दिग्गज, भूपिंदर सिंह हूडा को 90 में से 73 टिकट दिए गए बांटने के लिए, जिससे यह स्पष्ट संदेश गया कि वो ही "बॉस" और अगले मुख्यमंत्री हैं।

इससे गैर जाट डर गए जो जाटों की शक्ति से आंतकित थे और उन्होंने, भारी प्रशासन विरोधी भावनाओं के बावजूद भाजपा को वोट दिया। दलितों ने भी कांग्रेस का पाला छोड़ दिया और जेल से बाहर आए राम रहीम के नेतृत्व में भाजपा को वोट दिया। राम रहीम के अधिकतर अनुयायी दलित हैं।

भाजपा ने, मतों को विभाजित करने के लिए तथा कांग्रेस वोट बैंक में सेंध लगाने के लिए हर एक निर्वाचन क्षेत्र में बखूबी से माइक्रोमैनेजमैंट किया। हरियाणा में चौटाला की पार्टी से बसपा का गठबंधन किया कश्मीर आज़ाद से ताकि वोट काटे जा सके। यही नहीं निर्दलियों को भी मैदान में उतारा कांग्रेस को नुकसान पहुंचाने के लिए।

कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि कुछ जिलों में ई.वी.एम. के साथ छेड़छाड़ की गई। पार्टी का आरोप है कि उन ई.वी.एम. में, जिनमें बैटरी 99 प्रतिशत थी (जो कि

(शेष पृष्ठ 3 पर)

दो अमरीकी वैज्ञानिकों को फीज़िक्स का नोबल

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 अक्टूबर। फीज़िक्स में वर्ष 2024 का नोबल पुरुस्कार जॉन

- जॉन होपफील्ड और ज्यॉफ्री हिंटन को आर्टिफिशियल न्यूरल नैटवर्क के साथ मशीन लर्निंग में नई खोज करने के लिए नोबल पुरुस्कार दिया गया है।

एच. होपफील्ड एवं ज्यॉफ्री ई. हिन्टन को दिया गया है। इन्हें यह सम्मान

(शेष पृष्ठ 3 पर)

मंदिर से घर आते दम्पति पर पैंथर ने हमला किया

उदयपुर, 8 अक्टूबर (कासं)। सोमवार रात उदयपुर शहर से करीब 18

- कुराबड़ मार्ग पर यह स्थान उदयपुर शहर से 18 किलोमीटर दूर है। दम्पति बाइक से गिर गया था, पर, अन्य वाहनों की अवाज़ से पैंथर भाग गया।

किलोमीटर दूर कुराबड मार्ग पर पैंथर ने मंदिर से लौट रहे बाइक सवार दम्पति

(शेष पृष्ठ 3 पर)

हरियाणा की सफलता से महाराष्ट्र और झारखंड में भाजपा की संभावनाएं मजबूत होंगी

हरियाणा में तमाम विपरीत हालातों और अनुमानों के बावजूद भी जीत हासिल होना भाजपा की बड़ी सफलता है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 अक्टूबर। हरियाणा में एग्ज़िट पोल्स की भविष्यवाणियों के विपरीत हुई भाजपा की अप्रत्याशित विजय पार्टी की समझ-बूझ तथा रणनैतिक कौशल को रेखांकित करती है, जबकि पार्टी के सम्मुख अनेक चुनौतियाँ थीं। इस स्थिति में ऐसी सम्भावना प्रतीत होना स्वाभाविक ही है कि शीघ्र ही होने वाले महाराष्ट्र एवं झारखंड के चुनावों में भाजपा की स्थिति को अतिरिक्त बल मिलेगा तथा भाजपा विपक्ष की एकता एवं रणनीतियों को चुनौती दे सकेगी।

हरियाणा में, भाजपा एग्ज़िट पोल्स के जबड़ों से विजय को छीनती दिखाई दी है। विदित ही है कि एग्ज़िट पोल्स ने राज्य में कांग्रेस की बहुत बड़ी जीत की भविष्यवाणी की थी।

हालांकि परिणाम अभी आ रहे हैं, लेकिन बढ़त एवं जीत दर्शा रही हैं कि भाजपा बहुमत के आँकड़े को पीछे छोड़ चुकी है। हरियाणा में भाजपा की लगातार तीसरी जीत हो गई है, इस स्थिति यह जीत और भी असाधारण एवं अद्वितीय हो गई है क्योंकि पार्टी, लम्बे समय से सत्तासीन होने के कारण,

- राजनैतिक हलकों में पूछा जा रहा है कि क्या लोकसभा चुनावों में इंडिया गठबंधन को मिली सफलता का रंग उतरने लगा है।
- विपक्षी दलों को अब कुछ अलग सोचना होगा और संगठन व प्रबंध के स्तर पर काम करना होगा। अब तक विपक्षी दलों को लग रहा था कि वे जातिवाद के सहारे भाजपा को मात दे सकते हैं।

सत्ता-विरोधी लहर की आंशका से त्रस्त दिखाई दे रही थी।

हरियाणा, जहाँ सारी स्थितियाँ भाजपा के विरुद्ध थीं, में भाजपा की विजय यह दर्शा रही है कि पार्टी पतन की ओर नहीं जा रही, जैसा कि बहुत-से लोगों ने ऐसा सोचा था, जब कुछ पहले हुए लोकसभा चुनावों में इसका प्रदर्शन अपेक्षाओं से कुछ कम रहा था।

जब भाजपा लोकसभा चुनावों में 400 सीट जीतने के अपने लक्ष्य से काफी नीचे रह गई थी, यहाँ तक बहुमत का आँकड़ा नहीं छू पाई थी, उसे अपने बड़े मित्र दलों, टी.डी.पी. तथा जे.डी.(यू.) की मदद से सरकार बनानी पड़ी थी। लोकसभा चुनाव परिणामों को भाजपा के प्रभुत्व के दशक के अन्त तथा विपक्षी दलों इंडिया ब्लॉक के उदय के रूप में देखा गया था। कांग्रेस नेता राहुल गांधी, जो विपक्ष के सबसे कद्दावर नेता के रूप में उभरे थे, को एक परिपक्व नेता के रूप में देखा गया था, क्योंकि कांग्रेस ने 2019 के चुनावों में जीतीं 52 सीटों से करीब दोगुनी सीटें जीत ली थीं। सुप्रसिद्ध मोदी-लहर, जिसका मतदाताओं पर जबरदस्त प्रभाव था, भी लोगों को उतार पर दिखाई देने लगी थी।

और भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह थी कि विपक्षी दल यह मानने लगे थे कि उन्हें आखिरकार जीत का फॉर्मूला मिल गया है। रेवड़ियाँ, जाति-जनगणना, जातिगत कोटा-वृद्धि जैसी चीजें, उनके अनुसार, भाजपा के विकास एवं हिन्दुत्व के एजेंडा को हरा सकती थीं।

प्रधानमन्त्री मोदी को इन चुनावों के

(शेष पृष्ठ 3 पर)

कांग्रेस स्वीकार नहीं कर पा रही है हरियाणा की हार को

हार को समझाने के लिए, वो ही पुराने ई.वी.एम. आदि कारण बता रही है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 अक्टूबर। कांग्रेस ने हरियाणा के चुनाव परिणाम को अप्रत्याशित एवं स्तब्ध कर देने वाला बताया है। अपने पक्ष की शुरुआती बढ़त के बाद भाजपा के पक्ष में रुझान आने और उनमें भाजपा की बड़ी जीत में तब्दील हो जाने के घंटों बाद, कांग्रेस ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वह इन परिणामों को स्वीकार नहीं कर सकती।

दिन के पूर्वान्ह काल में ही, कांग्रेस हरकत में आ गई थी तथा उसने चुनाव आयोग को एक पत्र लिख कर शिकायत की कि हरियाणा चुनाव के परिणामों की नवीनतम एवं त्वरित जानकारी देने में "समझ में न आने योग्य धीमी गति" रखी गई।

पार्टी के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने पत्र में लिखा, "जैसी कि आप कल्पना कर सकते हैं, इससे "बैड फेथ एक्टर्स" को ऐसे आख्यान गढ़ने का अवसर मिलता है, जो इस प्रक्रिया को कमजोर करते हैं। आप इसके उदाहरण एवं प्रमाण सोशल मीडिया की गतिविधियों में देख सकते हैं। हमें यह भी डर है कि इस प्रकार

(शेष पृष्ठ 3 पर)

- कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने इस बारे में चुनाव आयोग को शिकायती पत्र लिखा और कहा कि मतगणना के बारे में बहुत धीमी गति से अटपटे अंदाज़ में अपडेट किया गया, ऐसा लग रहा था कि अंदर ही अंदर गड़बड़ी चल रही थी।
- जयराम रमेश ने कहा कि 12 से 14 सीटों पर हमारे प्रत्याशियों ने मतगणना में गड़बड़ी की शिकायत की है। रमेश ने कहा कि जो प्रत्याशी अच्छे अंतर से जीत रहे थे, वे पचास, सौ व ढाई सौ वोटों से हार गए।
- रमेश ने कहा, यह तंत्र की जीत है, पर, लोकतंत्र की हार है। हम सारी जानकारी एकत्र कर रहे हैं और उसे चुनाव आयोग के समक्ष पेश करेंगे।

नाबालिग से दुष्कर्म, अभियुक्तों को 20 साल की सजा

जयपुर, 8 अक्टूबर। जिले की पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने 17 साल 9 माह की नाबालिग के साथ कई दिनों तक दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त मुकेश और विक्रम सिंह को बीस साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने दोनों अभियुक्तों पर 3.5

- पीड़िता के भाई ने फरवरी 2020 में विराटनगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस ने 25 दिन में अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया था।

लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी के.सी. अटवासिया ने अपने आदेश में कहा कि अभियुक्तों का कृत्य न केवल पीड़िता के प्रति, बल्कि पूरे समाज के खिलाफ किया अपराध है। ऐसे में अभियुक्तों के प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता। अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक

(शेष पृष्ठ 3 पर)

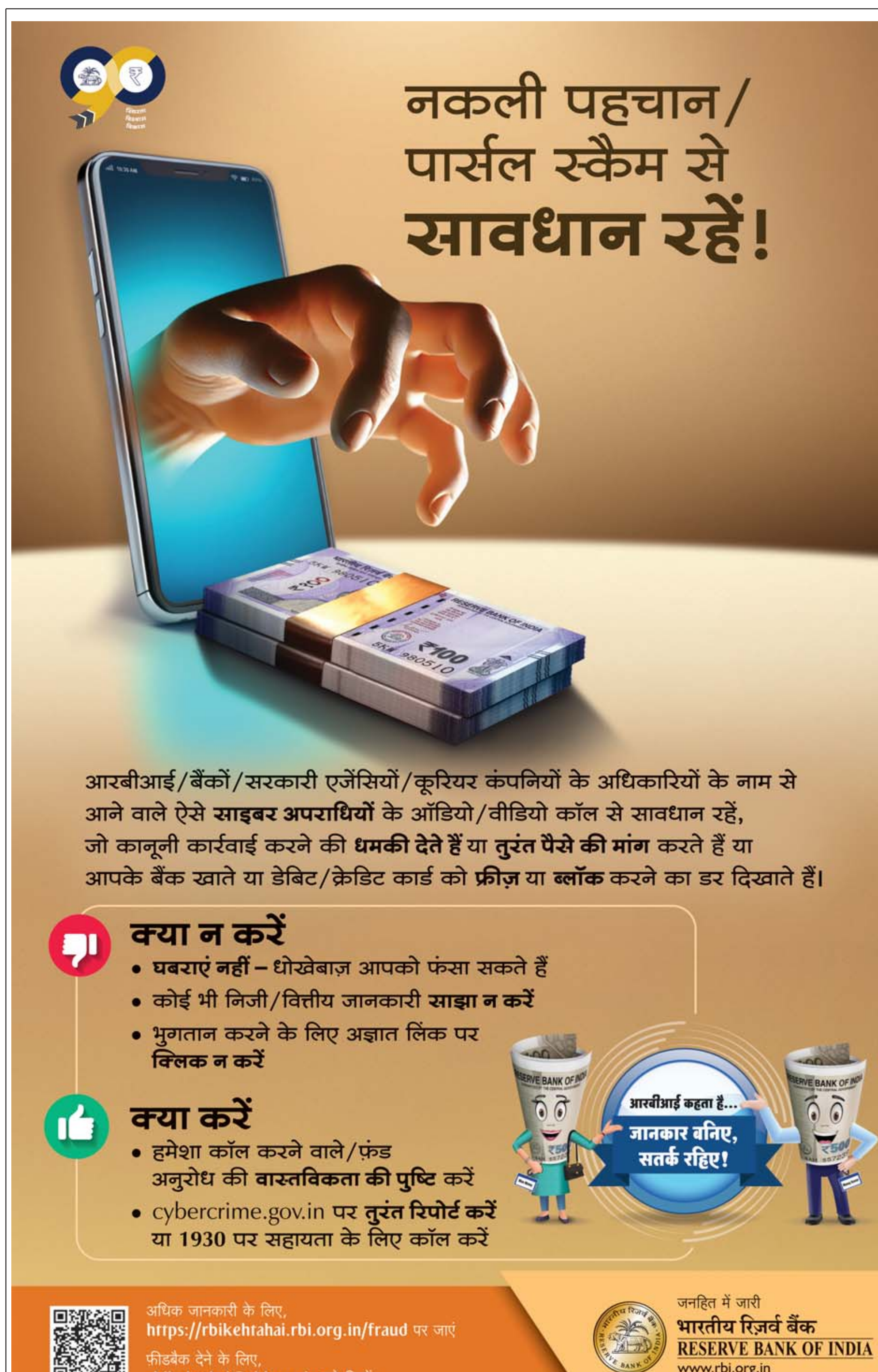

यह स्वीकार करना ही पड़ता है कि भाजपा का पर्दे के पीछे का चुनाव मैनेजमैंट, कांग्रेस से कहीं ज्यादा बेहतर है

कांग्रेस का नेतृत्व काफी विभाजित सा है, प्रदेशों में और केन्द्रीय नेतृत्व कितना भी प्रयास कर ले, कितनी भी समझाइश कर ले, प्रदेश के खेमेबाज नेताओं पर कोई असर नहीं पड़ता

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 अक्टूबर। हरियाणा में कांग्रेस नेताओं का अति आत्मविश्वास और जरुरत से ज्यादा बड़े ईगो की वजह से कांग्रेस लगातार तीसरी बार भाजपा से हार गई।

हरियाणा विधानसभा का भाजपा को बहुमत मिल चुका है। पार्टी 49 सीटों पर आगे है और कांग्रेस 36 सीटों पर आगे है। चुनाव आयोग की वेबसाइट पर ये आंकड़ें उपलब्ध हैं।

तीन सीटों पर निर्दलीय आगे हैं और एक-एक सीट पर आई.एन.एल.डी. और बसपा आगे हैं। आम आदमी पार्टी का खाता भी नहीं खुला है।

- हरियाणा में कम से कम 17 सीटें ऐसी थीं, जो कांग्रेस बहुत कम मार्जिन से हारी और वो जीत सकती थी, अगर प्रदेश का नेतृत्व जमीन की सच्चाई को स्वीकार करता और समय की माँग की अवहेलना नहीं करता।
- हूडा की सोच खड़गे और राहुल को माननी पड़ी और हूडा के इस तर्क के आगे मजबूरन झुकना पड़ा कि कांग्रेस स्वयमेव ही जीत रही है और आप व समाजवादी पार्टी से बात करने की जरूरत नहीं है।
- नतीजा यह हुआ कि इंडिया गठबंधन द्वारा तैयार किये गये माहौल व लोकसभा चुनाव के "मोमैन्टम" को उल्टा कर दिया।

कड़ी सुरक्षा के बीच सुबह आठ बजे मतगणना शुरु हुई थी।

राजनैतिक दलों के प्रदर्शन से संबंधित जो आंकड़ें एवं नतीजे उपलब्ध हैं, उन पर एक नज़र डालें तो पता लगता है की कांग्रेस के प्रदेश नेताओं, खासकर पूर्व मुख्यमंत्री भूपिंदर सिंह हूडा और उनके प्रतिद्वंदी कुमारी सैलजा एवं रणदीप सुरजेवाला के ईगो अति आत्मविश्वास के कारण इन चुनावों में

(शेष पृष्ठ 3 पर)